प्राणिशास्त्रीय और वैयक्तिक कारक
(Biological and personal factors)

भौगोलिक कारकों की तरह प्राणिशास्त्रीय और व्यक्तिगत कारकों को भी पृथक रूप से अपराध के कारण माना जाता है। कुछ विद्वानों का कथन है कि अपराध के कारणों को हमें बाहरी अवस्थाओं में नहीं बल्कि उस व्यक्ति के व्यक्तित्व में ही ढूंढने का प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि अधिकतर कुछ प्राणिशास्त्रीय और व्यक्तिगत विलक्षणताओं के कारण ही होते हैं। वे सम्बंध में निम्नलिखित कारकों को प्रमुख मानते हैं —

वंशानुसंक्रमण अपराध के कारक के रूप में (Heredity as a factors of criminality) — अपराध के कारणों को ढूंढने का प्रयत्न वंशानुसंक्रमण के आधार पर अनेक विद्वानों ने किया है। उनका मत है कि अपराध के वास्तविक कारण पर्यावरण नहीं बल्कि वंशानुसंक्रमण है। वास्तव में वंशानुसंक्रमणवादी तथा पर्यावरणवादी का यह विवाद बहुत पुराना है कि वंशानुसंक्रमण और पर्यावरण में से किसका प्रभाव मानव के आचरणों और व्यक्तित्व पर अधिक प्रभाव पड़ता है। एक ओर वंशानुसंक्रमणवादी श्री फ्रांसिस गैल्टन हैं जिन्होंने अपनी पुस्तक Heredity Genius में वंशानुसंक्रमण के महत्व को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। दूसरी ओर पर्यावरणवादी श्री जॉन वाटसन का दावा था कि उन्हें किसी भी वंशानुसंक्रमण वाले एक दर्जन बच्चों को अपनी इच्छानुसार पर्यावरण में पालने की स्वतंत्रता दे दी जाय तो वे मनचाहे व्यक्तित्व का निर्माण कर सके उनमें से वे किसी को भी डॉक्टर, वकील, व्यवसायी, शराबी, अपराधी, वेश्या या भिखारी बना सकते हैं। परन्तु वंशानुसंक्रमणवादी लेखक इसे स्वीकार नहीं करते और अपराध के कारणों के रूप में वंशानुसंक्रमण को अधिक महत्व देते हैं। वंशानुसंक्रमण अपराध का वास्तविक कारण है, इसको प्रमाणित करने के लिए पाँच विभिन्न तरीके सामान्यतया अपनाये जाते हैं —

(1) अपराधियों की तुलना जंगली लोगों से करना, (2) परिवारों के इतिहास का अध्ययन करना, (3) वंश में मेन्डेलियन अनुपातों का अध्ययन करना, (4) माता-पिता तथा उनके बच्चों के अपराधों के बीच सांख्यिकीय सम्बंधों का अध्ययन करना, (5) जुड़वा बच्चों का अध्ययन। इन तरीकों के सम्बंध में संक्षेप में विवेचना कर लेना यहां आवश्यक होगा।

1. प्रथम तरीके से वंशानुक्रमण को अपराध के कारक के रूप में दर्शाने का प्रयत्न श्री लोम्ब्रोसो तथा उनके अनुयायियों ने किया था। उनका विश्वास था कि अपराधी जन्मजात होते हैं और अपराध के समस्त आधार

CLASSMATE
Date :
Page :

वे तत्व एक व्यक्ति वंशानुसंक्रमण के आधार पर प्राप्त होते हैं।
श्री लॉम्ब्रोसो तथा उनके अनुयायियों का यह भी मत था कि अपराधियों की गैर-अपराधियों के शरीर में कुछ अंतर पाया जाता है। इस प्रकार अपराध के कारण के रूप में वंशानुसंक्रमण के महत्व को किसी भी रूप में अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

2. अपराध के कारण के रूप में वंशानुसंक्रमण के महत्व के रूप में स्पष्टीकरण के लिए विद्वानों ने अनेक वंशों तथा परिवारों के इतिहास का अध्ययन किया है। इन अध्ययनों में सर्वश्री डुगडेल और इस्ताब्रुक द्वारा ज्यूक परिवार के 1200 वंशजों का अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण है। इस परिवार का अध्ययन डुगडेल ने सन 1877 में और इस्ताब्रुक ने सन् 1915 में किया था। श्री कोनक्लिन का कथन है कि यह कोई आवश्यक नियम नहीं है कि जो गुण या दोष या प्रवृत्ति या आदत माता-पिता में है वही संतान में भी आ जाये। कभी-कभी तो इसका बिल्कुल उल्टा होता है।

3. कम से कम एक विद्वान ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि अपराध प्रवृत्ति केवल आनुपूर्विक पीढ़ियों में ही देखने को नहीं मिलती है बल्कि यह मैन्डेलियन अनुपात में ही सामने आती है। श्री कार्ल रथ ने जर्मनी के साइलजा के एक जेलखाने के 98 अपराधियों के पारिवारिक इतिहासों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि इन परिवारों की संतान बहुत कुछ मैन्डेलियन अनुपात के अनुसार ही अपराधी थी।

4. श्री गोरिंग ने यह प्रमाणित करने का यह प्रयत्न किया कि माता-पिता तथा उनके बच्चों के अपराधों के बीच सांख्यिकीय सम्बन्ध पाया जाता है। इनके अनुसार यदि कैद की सजा के आधार पर नापा जाए तो यह पायेंगे कि पिता और पुत्र की अपराधी प्रवृत्ति में पारस्परिक सम्बन्ध +60 के बराबर है जबकि भाइयों में यह सम्बन्ध +45 के बराबर है।

5. वंशानुसंक्रमण को अपराध के कारण के रूप में प्रमाणित करने का अंतिम तरीका जुड़वा बच्चों का अध्ययन है। इस सिद्धांत के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वंशानुसंक्रमण का प्रत्यक्ष प्रभाव अपराधी प्रवृत्ति के निर्धारण पर पड़ता है। परन्तु आधुनिक अन्य अनेक अध्ययनों से इस सिद्धांत की पुष्टि होती है।

समाप्त